International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डा0 रामकुमार वमा जो क नाटका म राष्टोय चतना का मूल्यांकन

Aditya Kumar Mishra, Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttrakhand
Dr. Poonam Devi, Assistant Professor, Department of Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttrakhand

सार–

डा0 रामकुमार वमा हिन्दो क बहुमखो पतिभा क धनो साहित्यकार ह। उन्हान कविता, नाटक, एकाको, निबन्ध एव आलाचना आदि अनक विधाआ म लिखा ह, आर सभो क्षत्रा म यश पाप्त किया। नाटक उनको पिय विधाआ म स एक ह। डा0 वमा न एतिहासिक नाटका को रचना क माध्यम स इतिहास का सिफ दहराया नहो वरन वा इतिहास का उसको गारवशालो छवि म अपनो यवा पोढो क सम्मुख पस्तुत करना चाहत ह। डा0 वमा न पाचोन एतिहासिक घटनाए लकर, एतिहासिक पात्रा म नवजोवन तथा उनम आवगमय स्फति का सचार किया ह। पसाद अपन नाटका म साहित्यकार क साथ इतिहास सजक भो बन गय ह, परन्तु डा0 वमा का इतिहास सजक नहो बनना ह। उनका लक्ष्य सोधा–सोधा भारतोय गारवशालो नाटक साहित्य परम्परा म एक अध्याय जाडना ह। डा0 वमा क नाटका म पववतो व परवतो दाना पकार को राष्टोय–चतना क दशन समय–समय पर हात ह।

पस्तावना–

रामकुमार वमा जो न पभात फरो क माध्यम स द"ा को जनता म राष्टोय–चतना पदा को। इन्हान हिन्दो साहित्य क लिए अमल्य निधि पदान को। इनक नाटका म राष्टोय–चतना भरपर मात्रा म मिलतो ह। जिसका शाधाथो न एकजुट करन का पयास किया ह। यह हिन्दो साहित्य क लिए एक नवोन आर अनठो खाज हागो। साहित्य वह दपण ह जिसस परणा पाकर भावो भविष्य का दखा जा सकता ह, महसस किया जा सकता ह, उसम बदलाव लाया जा सकता ह। साहित्य का किसो सोमा या क्षत्र म बाधना उसक साथ अन्याय करना ह।

पस्तुत शाध पपर म डा0 वमा क नाटका म उदघटित राष्टोय–चतना का अधिक स अधिक पस्तुत करन का पयास किया गया ह। उनक नाटक दश क नवयवका का सदव राष्टोय उत्थान क लिए परित करत रहग।

'विजय पव' नाटक म सगाम अपन अन्य भाइया स मिलकर अशाक का राज–सिहासन स हटाना चाहता ह, लकिन उनक धय आत्म विश्वास व साहस का दखकर स्वय नममस्तक हा जाता ह। अशाक, सगाम का मानव जोवन को साथकता क सम्बन्ध म उपदश दत ह। इसका एक उदाहरण पस्तुत ह–

"अशांक–महान तो मानव ह, सगाम! यदि कोइ व्यक्ति सच्चा मानव बन सकं। मानव ही राष्ट ह और मानव ही यग ह। वह अनन्त पगति ह, उसमं अनन्त शक्ति का सोत ह, यद्यपि वह नही जानता कि इस शक्ति का सोत कहा ह।"

नारो का पाचोन काल स आज तक भाग–विलास को वस्तु माना जाता रहा ह, लकिन समय क साथ–साथ नारो म चतना भो जागत हइ ह। नारो न एक आर नतिक व सामाजिक दायित्व का भलो–भाति पालन किया, ता दसरो आर धामिक काया को आर भो अगसर हइ। स्वयपभा क अन्दर धामिक चतना जागत हातो ह, आर वह सासारिक माह–माया का त्यागकर सघ म शामिल हा जातो ह। इसका एक उदाहरण पस्तुत ह–

"स्वय पभा–समाट! मेरं जीवन की पवित्रता का एकमात्र उददेश्य ह–भिक्षणी का जीवन। मझं आज्ञा दीजिए, समाट कि मं अपनं जीवन की सारी पवित्रता भिक्षणी कं जीवन मं उतार सकं, मं धन नही चाहती, मं वभव और सम्पदा कं विष सं अपनं कां मक्त रखना चाहती हं।"

अशाक को पत्नो महादवो सामाजिक–चतना स आत–पात स्त्रो ह। वा इस बात का भलो–भाति जानतो ह कि यद्ध स कवल विनाश हाता ह आर मानवोयता का हनन हाता ह। इसलिए वह यद्ध को निन्दा करतो ह। इसका एक उदाहरण स स्पष्ट किया जा सकता ह–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"महादवी–आर चारू! म भी आयपत्र स लडना चाहती ह कि व यह यद्ध बन्द कर द। मझ यह अच्छा नही लगता। कितन वीरा का नित्य रक्त बहता ह। आज जिन वीरा स दश की उन्नति हाती, वही व्यथ मर रह ह।"

महादवो क हृदय म कटता क स्थान पर करूणा ह। महादवो यद्ध क स्थान पर शान्ति व अमन को बात करतो ह। वह चाहतो ह कि सगाम बन्द हा, आर चारा आर शान्ति का वातावरण हा। पत्यक व्यक्ति सम्मान व शान्ति स जोवन यापन कर। महादवो, चारू स कहतो ह–

"यह यद्ध मझ नही चाहिए। कितन दिना स इस शिविर म रहत हए जस मरा सख सपना बनता जा रहा ह। रात्रि म यद्ध की समाप्ति पर उनक दशन कर लती ह तो एसा ज्ञात हाता ह जस कांइ वद्धा यवती बन गयी हा। आज कहगी कि व कालग का यद्ध बन्द कर द। वीरा का स्वतत्र सास लन दना भी ता दया की क्रुरता पर विजय ह। मझ ता इस विजय पर ही सताष ह।"

राष्टोय–चतना क विभिन्न पक्ष

राष्टोय–चतना एक व्यापक शब्द ह। राष्टोय–चतना शब्द दा शब्दा स मिलकर बना ह। राष्टोय+चतना। राष्टोय–चतना का जानन स पव राष्टोय व चतना दाना शब्दा का ज्ञान हाना आवश्यक ह। राष्टोय शब्द राष्ट स बना ह। राष्ट अगजो शब्द Nation का हिन्दो रूपान्तरण ह। राष्ट शब्द का अगजो अथ ह। जन्म या जाति। राष्टोयता वह उदात्त भावना ह, जा एक दश क नागरिका का एक सत्र म आबद्ध करतो ह। भल हो व नस्ल, जाति, धम, सम्पदाय एव सस्कृति म एक दसर स भिन्न हा। यहो उदात्त भावना उनम स्वातत्र्य, स्वाभिमान एव सम्पभ्ता को इच्छा का बल पदान करतो ह। अपन सरलतम रूप म यहो दशभक्ति ह, आर यहो अपनो जन्मभमि स पम ह। चतना का अथ ह–जानना। क्या जानना? थाडा कछ या टकड–टकड म जानन का चतना नहो कहत। यह सम्पण ज्ञान हाता ह, इस पकार राष्टोय–चतना स अभिपाय राष्ट म घटित हान वालो घटनाआ क पति जागरूक हाना। राष्टोय–चतना क विभिन्न पक्षा क अन्तगत उसक सामाजिक, सास्कृतिक, धामिक व राष्टोय पक्ष आत ह, अथात समाज म जा भो सामाजिक, धामिक, सास्कृतिक घटनाए घटित हातो ह। उनका पत्यक्ष या पराक्ष सम्बन्ध राष्टोय–चतना स हाता ह।

डा0 रामकमार वमा हिन्दो साहित्य क यशस्वो नाटककार ह। व भारतन्द व पसाद दाना क सास्कृतिक व एतिहासिक नाटका स परणा गहण करक नाटक को रचना करत ह। उनक नाटका म एक आर दश पम को पबल भावना ह। ता दसरो आर मानवतावाद व गाधो क अहिसावादो विचारा का पभाव ह।

उनक नाटका म राष्टोय–चतना क विभिन्न तत्व विराजमान ह। उनक नाटक राष्टोय–चतना को सभो मलभत विशषताआ का रखाकित करन म सफल हए ह। राष्टोयता उनक नाटका का मल स्वर ह। जगह–जगह राष्टोयता का स्वर उनक नाटका म विद्यमान ह। उनक नाटक इतिहास को कथाभमि पर आधारित हाकर वतमान को समस्याआ क पति चिन्तापर भो बनात ह, आर तत्कालोन समाज म हान वालो घटनाआ का परो तन्मयता स पस्तत करत ह।

राष्टोय–चतना क विभिन्न आयाम

मयर–पखो व्यक्तित्व वाल बहमखो पतिभा क धनो डा0 रामकमार वमा हिन्दो साहित्य म एकाको क जनक मान जात ह। इसक साथ हो व एक महान नाटककार भो ह। डा0 रामकमार वमा न जिस समय साहित्य क क्षत्र म पदापण किया, उस समय हमारा दश अगजा का गलाम था। भारतन्द हरिशचन्द, जयशकर पसाद, राधाकृष्ण दास, उदयशकर भटट आदि नाटककार अपन–अपन ढग स, साहित्य क माध्यम स दशभक्ति को भावना का पचार कर रह थ। एक साहित्यकार पर, उस यग को परिस्थितिया का गहरा पभाव पडता ह।

डा0 वमा जो पर भो उसका गहरा पभाव पडा। उन्हान भो दश–पम को भावना स आत–पात नाटका को रचना को। उनक नाटका म ऊषाकालोन माहक लालिमा ह। डा0 रामकमार वमा क समय म हमारा दश अगजा का गलाम था। अगज लाग, भारतोय जनता का तरह–तरह स शाषण कर रह थ। अगज लाग भारतोय जनता पर निमम पहार कर रह थ। डा0 रामकमार वमा का मन अगजा क अत्याचार स खिन्न हा उठा। दसरो आर गाधो जो सत्य व अहिसा का पचार करक भारतोय जनता का जागत कर रह थ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डा0 वमा क समय राष्टोय आन्दालन निराशा, सघष आर पराधोनता क काहर म सिमटा था। डा0 रामकमार वमा न अपन नाटका क माध्यम स जगत म नवोन चतना लान का पयास किया। उन्हान पसाद क नाटका स परणा लकर अपन नाटका म राष्टोयता क स्वर का बलन्द किया। **'महाराणा पताप'** व **'जाहर को ज्याति'** दाना म दश–पम को भावना यत्र–तत्र बिखरो ह। इनम नारिया क आदश का रखाकित किया गया ह।

'भगवान बद्ध' व **'जय वधमान'** म समाज म फल धामिक, पाखण्ड पर तोखा व्यग्य किया गया ह। इसक साथ हो जगत को नश्वरता को आर सकत किया ह। **'विजय पव'** म यद्ध क पश्चात को भयकर परिस्थिति या विनाश स अवगत कराया ह। **'जय भारत'** म अपनो मातभमि क पति दशवासिया क पम व बलिदान का दशाया गया ह। व फिरगिया स अपन राष्ट का मक्त करान क लिए दढ सकल्पित ह। **'जय बगला'** म बगाल विभाजन क समय भोषण नरसहार का, मानवोयता क हनन का परो तन्मयता क साथ पदशित, अच्छाइया व बराइया का तटस्थता क साथ रखाकित किया गया ह।

स्वदश पम का व्यक्त करन वाल शब्द भो वक्ता को अन्तनिहित राष्टोयता का पकट करत ह। उसक पमाण म **'शिवाजो'** नाटक म आबा जो को बहिन काशो व उसको परिचारिका क मध्य वातालाप का एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता ह–

''काशो–स्वदश का व्यक्ति, विदश म जाकर उदास हा जाता ह।''

भारतोय सस्कृति म मान–मयादा का सदव सम्मान हाता रहा ह। नारो का सम्मान भो, भारतोय सस्कृति को पहचान ह। मातभमि, मा व नारो तोना हो हमार लिए पजनोय ह। जहा नारिया का सम्मान हाता ह, वहा दवता निवास करत ह एसा वदा म वणित ह। आबाजो यद्ध म गाहरबान का पकड लत ह। लकिन उसको मान–मयादा का परा ध्यान रखत ह। इस सम्बन्ध म एक उदाहरण पस्तत ह–

''आबाजी–श्रीमन्त की आज्ञा हं कि संना कं साथ न स्त्रियां रह सकती हं आर न दासियां। किन्त गाहरबान की मयादा रक्षण कं लिए मझं इस शिविर मं अन्तःपर का पबन्ध भी करना पडा।''

भारतोय सस्कृति म पजा–अचना का विशष महत्व ह। जब भो काइ नया काय या किसो काम स घर स बाहर पस्थान किया जाता ह ता घर को नारिया अपन पतिया या पत्रा का मगल तिलक करतो ह। उन्ह अपन हाथा स शस्त्र दतो ह, आर साथ हो विजयश्रो का आशोवाद दतो ह। काशो भो यद्ध म जान स पव अपन भाइ आबाजो का मगल तिलक करतो हइ कहतो ह–

''काशी–(पशसा कं स्वरां मं) भाइ, यह सब आपकी काय कशलता हं। इसीलिए तां आप अपनं आक्रमणां मं सदव सफल होतं हं।

आबाजी–वह भवानी की कृपा आर तम्हारी मगलकामना हं, काशी।

काशी–(उल्लास सं) महाराष्ट की ललनाओं कं मगल तिलक मं बडा बल हं। मंरी आरती निष्फल नही जा सकती।''

'जय बगला' नाटक म समाज म फल अत्याचार व वमनस्य का रखाकित किया ह। पाकिस्तानो सनिक बगालो जानता का लटत ह। उनक घरा म आग लगा दत ह, आर नारो जाति क साथ दव्यवहार करत ह। जिसस मानवोयता कराह उठतो ह। इस सम्बन्ध म एक उदाहरण इस पकार ह–

''फातिमा–(घबराकर), हाय अल्लाह! यं कान हं?

बाहर सं आवाज–दरवाजा खांल, सअर कं बच्चं।

फातिमा–(कांपती आवाज सं) घर–घर मं मियां नही हं।

बाहर सं आवाज–मियां जहन्नम मं गया त तां हं मियां की बीवी, कमीनी दरवाजा खांलती हं कि नही, दरवाजा खांल।

फातिमा –(दढता सं) मं दरवाजा नही खांलंगी। बाहर सं आवाज–घर मं आग लगा दां, अब्दल्ला।''

स्वतत्रता स पव सत्य, अहिसा, त्याग, परापकार, सहानभति को कोमत थो। लकिन बदलत समाज म वमनष्य, कटता, जातिवाद, साम्पदायिकता न अपनो जड गहरो कर लो। पाकिस्तानो सनिक निदाष व निरोह बगालो जनता पर अत्याचार करत ह। उनका सरआम कत्ल करत ह। नतिकता व मानवोयता जस शब्द उनक लिए नहो बन ह। व चारा आर मात का ताण्डव नत्य करक पसन्न हात ह।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कष–

जिस पकार मध्यकालोन भारतोय समाज म धामिक भावना का तात्रिका एव पाखण्डिया न कठित किया, उसो पकार आधनिक भारत म आजादो क बाद भारतोय समाज का राजनोति क दष्चक्र न कठित कर दिया ह। सच्चो राष्टोयता का धोर–धोर ह्रास हान लगा। कदम–कदम पर भष्टाचार, अनाचार, अत्याचार न राष्टोय बाध का धमिल करक रख दिया। एस समय म दश क महान साहित्यकारा का ध्यान समाज को गलनशोलता को आर गया आर उन्हान समाज को छवि सधारन का पयत्न किया। उन्हान समाज क उत्थान क लिए राष्टहित का महत्ता पदान करन को याजना बनाइ। डा0 रामकमार वमा जो एस नाटककार थ, जिन्हान अपन नाटका म राष्टोयता क स्वर का पमखता दो। व सामाजिक व राष्टोय उत्थान क पक्षधर थ। राष्टोयता वह भाव ह जिसस अनपाणित हा साहित्य सजक अतोत का गारवगान, वोरा को यशागाथा आर कतव्य परायणता क वणन क लिए परित हाता ह। वमा जो क नाटका म एतिहासिकता एव सास्कृतिकता को जा धरो ह। उसको बाहरो परिधि म सवत्र राष्टोयता का रग भरा हआ ह। उनक पायः सभो नाटक राष्टोय–चतना स आत–पात ह। उन्हान अपन नाटका म भारतोय सस्कृति को महानता एव दशवासिया को अपनो मातभमि क पति अगाध श्रद्धा का चित्रित किया ह। उनक नाटक भारतोय लागा म त्याग, बलिदान व राष्ट पम को भावना जागत करन म सफल हए ह।

सदभ गन्थ सचो

- पसाद क सम्पण नाटक एव एकाको–डा0 सत्य पकाश मिश्र, लाकभारतो पकाशन, इलाहाबाद–1, ततोय सस्करण–2008
- चन्दगप्त–जयशकर पसाद, जनभारतो पकाशन, 66/719 दरियाबाद, इलाहाबाद, सस्करण–1998
- स्कन्दगप्त–जयशकर पसाद, अनोता पकाशन, दिल्लो–110006, नवोनतम सस्करण।
- रामकमार वमा नाटक रचनावलो (भाग–1) सम्पादक डा0 कमल किशार गायनका व डा0 चन्दिका पसाद शमा, पकाशक–किताब घर, दरियागज, नइ दिल्लो–110002, सस्करण–2010
- रामकमार वमा नाटक रचनावलो, भाग–2, सम्पादक–डा0 कमल किशार गायनका व डा0 चन्दिका पसाद शमा, पकाशक–किताब घर, दरियागज, नइ दिल्लो–110002, सस्करण–2010
- रामकमार वमा नाटक रचनावलो, भाग–3, सम्पादक डा0 कमल किशार गायनका व डा0 चन्दिका पसाद शमा, पकाशक, किताब घर दरियागज नइ दिल्लो–110002, सस्करण–2010
- नानाफडनवोस–डा0 राम कमार वमा, लाकभारतो पकाशन, इलाहाबाद–1, सस्करण–2000
- शिवाजो–डा0 राम कमार वमा, साहित्य भवन, इलाहाबाद–21103, दशम सस्करण–1987